निश्तुकी

उमेश मंडल

निश्तुकी

निश्तुकी

उमेश मंडल

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-37-2

मूल्य: भा. रु.100/-

पहिल संस्करण : 2009

दोसर संस्करण : 2012

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-

(०११)२५८८९६५७

Website: http ://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset : Umesh Mandal.

Distributor : *Pallavi Distributors*, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 9572450405, 9931654742

Nistuki: Anthology of Maithili Poems by Umesh Mandal.

अनुक्रम

दूटा गजल

उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रहक दोसर संस्करणक मादेँ

उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह थिक। मैथिलीक नव तुर मात्र उमेरकेँ प्रतिष्ठा नै देबऽ चाहैए, जँ ओ उमेर अग्रगामी नै होथि। आ से हेबाको चाही, काजक सम्मान छै उमेरक आ पुरानक नै। आ तेँ पुरान आ उमेरगर जँ अग्रगामी छथि तँ तिनका प्रतिष्ठा किए नै भेटन्हु? ई टनका देखू:

समस्याँ आप्त
सोलहनी सजल
साहित्यकार
लेखे पुरान छै आप्त
केना एतै यथार्थ

आ तेँ "बुढ़ारीमे" क्षणिकामे ओ कहै छथि:

जिनगी चाह करैए
कर्मक बाट देखबैए

आ कर्मका बाट जँ पकड़ि लेब तखन धुधुएबे करब:

भुरकी-सँ-भार बनि
बील बोहरि धरि
बनि-बनि असंतोष
धोधरि बनि धुधुआ रहल अछि

मिथिलासँ पड़ाइन भऽ रहल छै। से रहि-रहि कचोटै छन्हि कविकेँ। आ जँ वसन्तक आगमन भऽ जाए तखन तत्व ज्ञान भैये ने जाएत!

बसंत आएल
गाम जाएब
आब एतए
रहि नै पाएब
बसंतेक खोजमे तँ
छी बौआएल

ऐ पड़ाइनसँ:-

गामक मुँहथरि
जंगल बनल अछि

हुनका विचारक फाँट सेहो रहि-रहि देखा पड़ै छन्हि:

अहाँक गप
अपन मन
दुनू मिलैए
मिलि दुनू अछि चौचंग
खोजि रहल अछि वसंत
मुदा
बसंतक चिड़ैकेँ
संग नै राखए चाहै छी हम

हुनका बुझऽमे आबि रहल छन्हि :

भकोभन ओइ अन्हार कोठरीमे

आ ओ अहाँसँ पूछि रहल छथि:

तखन शीशामे केना देखाएत
ओकर चित्र केना आएत?

आ कियो नै सुनऽ चाहै छथि ओ गीत जतऽ मात्र आ मात्र गाओल जा रहल अछि संस्कृतिक गीत:
हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरकेँ
सुनैले नै छथि कियो तैयार

किए नै सुनै लेल छथि तैयार, कारण अछि डर, दर्दक डरे ओ नै सुनऽ चाहै छथि हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरकेँ।
किछु अजीब बात सभ हुनका असहज लगै छन्हि:
आगि-पानिकेँ
मनक माइनकेँ

कारण सेहो छै, अगिलहीक बिम्ब देखू:
सप्पत खाइ काल देवता
लोकक घर जड़बैकाल मित्ता

ज्ञान आ ज्ञानी आ ज्ञानक प्रकाश सेहो हुनका कखनो ओझरीमे धऽ दै छन्हि:
ज्ञानो भऽ जाइत अछि गुलाम
सांकृत्यायन पड़ै छथि मोन धराम

लहास जे अहाँकेँ बुझा पड़ैए सेहो आब बाजत:
आब ओ बाजत
बजैत-बजैत हँसत
अहाँक कृतिपर
बनल संस्कृतिपर

मंगल आ मंगला हुनकर कवितामे सेहो कएक ठाम आएल अछि। विवशताक प्रतीक अछि मंगला!
कातमे ठाढ़ भऽ मंगला

आ आगाँ...
अपनाकेँ केलक एकोर

तँ सुखाएल घाटक घटवारी मंगलापर देखू ओकर विवशता:
सुखलौ घाटक लेतै खेबाइ
नै देबै तँ देत ई रेबाड़ि।
सएह भेल मंगला घुरि गेल
पछिमे मुरि गेल

कवि कुम्हरौटक बिम्ब एना अनै छथि:
काँच माटिक मूर्ति जहिना
ढाँचा मात्र कहबैए।
तहिना तँ फूलोसँ बनल फल
सिरखार मात्र कहबैए।
आ वएह सिरखार ने
आशा बान्हि-बान्हि
रौद-बसात सहैए

आ अपने सन आर बटोही सेहो हिनका भेटि जाइ छन्हि:
हमरे सन इहो सभ बटोही
हराएल बाट बढ़ए चाहैए

कविकेँ कोनो भ्रम नै छन्हि जे जेहने बाट चलब तेहने घाट भेटत आ तखन ओइ घाटपर पानि सेहो तेहने भेटत:

जहिना चलैक बाट होइ छै
तहिना तँ बुझैयोक बाट छै
जेहेन जे बाट चलै छै
तेहने घाट पहुँचै छै

ई बाट आ विचार हुनकर एकटा आरो कवितामे अबैत अछि:
विचारक संग जँ चालि रहल
घाटपर जाइसँ कियो नै रोकत

आ नीक वा अधलाह बाट कियो केना धरैए, तहूपर हुनकर लेखनी चलै छन्हि:
जेहने घरक लोक रहै छै
घरक मुँहथरि तेहने होइ छै।
जेहने घरक मुँहथरि रहै छै
तेहने ने बाटो धड़ै छै

आ ई बाट हुनकर पछोड़ गजलमे सेहो नै छोड़ै छन्हि:
गोर मौगी गौरबे आन्हर भेलि अड़ल
करिया बाट बुझाइए चलू घुरि चली

ओ निराश कखनो नै होइ छथि:
मरलेमे मारि खा-खा
मारल बुइध कहबै छी

आ एकर कारण छै, ओ कहै छथि:
जहिना पबिते अद्राक पानि
मुइलहो धार जीबै छै।
भलहिं जीतहा धार बीच
तीन-मसुआ ओ कहबै छै

आ ऐ आशा-आक्रोश आ निराशाक मध्य ओ लिखै छथि:
छोड़ि देने टूटि जाएत समाज
अपन उमेश जोड़तै तँ चहकतै लगैए ई।

उमेश मण्डल जे किछु कहै छथि निश्तुकी कहै छथि, घुरछी, ओझरी सभटा चारू कात पसरल छन्हि। मुदा सोझराबै छथि, ओझराबै नै छथि।

--गजेन्द्र ठाकुर १९ मइ २०१२

अप्पन बात-

अपन रोपल पहिल पुष्प अपने लोकनिक हाथमे दैत असीम आनन्दक अनुभव भऽ रहल अछि। कविता संग्रह अपनेक हाथमे अछि तँए ऐ सम्बन्धमे किछु कहक खगता हमरा नै बुझाइए। पहिल संग्रह होइक नाते रंग-बिरंगक त्रुटि हएब स्वभाविक। जइ लेल अपनेक विचार-सलाह-सुझाव शिरोधार्य रहत। जौं अगिला अंक निकलि सकल तँ जरूर अपनेक विचारकेँ समाहित कएल जाएत आ से करैत हमरो नीक लागत।

साहित्यक विद्यार्थी हेबाक नाते कथा, कविता, उपन्यास, महाकाव्य पढ़बाक अवसर भेटैत रहल अछि मुदा लिखबाक विचार हेमन्मिे जागल। ओना परिवारमे साहित्यक प्रति आकर्षण आइये नै पहिनहिसँ अछि। बाबेक अमलदारीमे 'महाभारत', 'तुलसीकृत रामायण', कबिर रचित 'अनुराग सागर' घरमे अछि जेकरा समए-कुसमए उनटबैत-पुनटबैत रहलौं अछि।

आइक जे भाग-दौड़क जिनगी बनि गेल छै ऐसँ पढ़ैक-लिखैपर बहुत बेशी प्रभाव पड़ि गेल अछि। जइक चलैत परिवार-समाजमे अपनापनक विचार सेहो शिथिल भऽ रहल अछि। हाइ-नारायण, सबहक मनकेँ यएह घेर लेने छन्हि जे पाइयेसँ सभ किछु होइ छै। तँए जौं पाइ भऽ जाएत तँ जिनगीक सभ उदेसक पूर्ति भऽ जाएत। मुदा ओ ई बूझैसँ कात भऽ जाइ छथि जे जिनगी जीबैले पाइयोक जरूरति होइ छै जे एक साधन मात्र छी।

वैश्वीकरणक प्रभावसँ आइ दुनियाँ गाम-घर जकाँ बनि गेल अछि। जेकर प्रभाव जिनगीक कोने-कोन पसरि रहल अछि। जखने कोने-कोन पसरि रहल अछि तखने जीवन-धारा प्रभावित हेबे करत। जखने जीवन-धारा प्रभावित हएत तखने आचार-विचारक संग जीवन-शैली सेहो प्रभावित हएत। एक समए छल जखन कठिन मेहनति कए कऽ कवि शास्त्रीय पद्धति अपनौलनि जे आइक जुगमे कठिन भऽ गेल अछि। जइसँ नव-नव शैली, नव-नव ढंग नव-नव पाठक लेल आबि रहल अछि। जइठाम छन्द-अलंकार प्रमुख छल ओ गौण भऽ रहल अछि। संग-संग पढ़ै-लिखैक दयरा सेहो बढ़ल अछि। देश-विदेशक भिन्न-भिन्न भाषा, भिन्न-भिन्न शैलीक संग भिन्न-भिन्न समाज आ ओकर जीवन पद्धति सेहो बुझबाक आ जनबाक अवसर भेट रहल अछि। जइसँ कवि-साहित्यकार प्रभावित हेबे करताह।

कविता लिखैक प्रेरणा भाय गजेन्द्रजी (श्री गजेन्द्र ठाकुर) आ भाय नागेन्द्रजी (श्री नागेन्द्र कुमार झा) सँ भेटल 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादनक अवसर जखन देलनि आ काज करए लगलौं तखन रंग-रंगक कविता, गीत, गजलक संग-संग गद्यो विधाकेँ देखबाक अवसर भेटल जइसँ कलम घुसकए लगल।

हलुआ-गीत जकाँ संग्रह भऽ गेल अछि। कविता, लघुकविता, गीत, हइकू, टनका इत्यादिक समावेस संग्रहमे भऽ गेल अछि।

अंतमे, विदेहक सम्पादक मंडल आ श्रुति प्रकाशनक सभ संगीक आभारी छी जे भरपुर उर्जा प्रदान कऽ रहल छथि। अदौसँ हमरा सबहक संस्कार रहल अछि जे नीकक सेहन्ता आ अनुकरण करैत एलौं जखन कि अधलाकेँ छोड़ितो आ गौणो करैत एलौंहेँ।

अहाँक-

उमेश मंडल

गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया
जिला- मधुबनी, बिहार- 847452
मो. 9931654742

कुमही

फूल सदृश रूप हमर
कहबै छी कुमही मगर।
फूले सदृश सिरो हमर
धरतीसँ हटल छी मगर।
ऊपर पान्कि बास हमर
पान्यि पीब करै छी गुजर-बसर।
लाइग कोनो नै धरतीसँ हमर
रस धरि चुसैत रहलौं ओकर।
पबिते पूर्वाक सिहकी हम
पछिम भाग टहलि जाइ छी।
जखनि पबै छी पछबाक सिहकी
पूब दिस टहलि जाइ छी।
बीच उत्तर दछिन पूरब पछिम
विपरीत-विपरीत चालि धड़ै छी।
सिर शरीरसँ नम्हर रहितो
धरती कहियो नै छूबि पबै छी।
आश-निराश बीच हम
सुन्दर रूप बना जिबै छी।

धर्मात्मा

धर्मात्मा होइ छथि तियागी।
तियागी कहल केकरा जाए यौ भैयारी?
वएह ने
जे केलनि तियाग
आकि ओ
जे केलनि भोग बेसुमार।
एक लोटा पानियो पीलनि
दोसरेक हाथ।
मजदूर, हरबाह
भिनसरसँ साँझ धरि
देह धुनैए
उचित बोनि मात्र दू सेर पबैए
एक सेर बेच लऽ दोकान जाइए
नून, तेल, हरदी, गोटी किनैए
बचलाहा एक सेरसँ सभो परानी पेट चलबैए
भरि दिन तँ ओहो खटबे करैए?
अहीं कहू,
केहेन पंचैतिया एले
पंचैती करए काल
ऊपरे-ऊपर नजरि दौड़ौलकै।
काजुल संग तियागीकँ देखि ने पेलै
हिनक तियागपर नजरि नै खिड़ेलकै
भोगीकँ धर्मात्मा कहि गेलै।

शुभारम्भ

साँझक समए छल
झिस्सी पड़ैत छल।
हालहिमे सिनेमाक हाँल
जे थप्प भेल पड़ल छल
तेकर पुन: शुभारम्भ भेल छल।

अबैत रहथि ओम्हरसँ ओ
लखन पान दोकानदारकेँ देखिते
पूछि देलखिन हाल-चाल करिते
“की यौ लखन, दोकान तँ आब
चलैत हएत खन-खन?”

लखन करए लागल भन-भन-
“आबे गड़बड़ अछि
पहिनहि ठीक छल।”

ओ वेचारे सोचए लगलाह-
जहियेसँ हाँल चालू भेल हएत
दोकान सबहक विक्री चौगुना भेल हएत
तखन ई किअए बजैए
पहिनुके विक्रीकेँ नीक कहैए।
ओ, विचारए लगलाह हठात्
भीतरमे आखिर अछि किछु बात
लखनसँ पूछि बैसलाह तड़ाक-
“केना पहिनहि ठीक छल
अहाँक समाचार नीक छल?”

“यौ भाय, हम अपन विक्रीसँ जतेक नै खुशी छी
विक्रमक विक्री बढ़ि गेने ओइसँ बेसी दुखी छी।”

लखन किछु अहिना सोचलक
किन्तु मोनक बात नै उगललक।

मुँहथरि

जेहने घरक लोक रहै छै
घरक मुँहथरि तेहने होइ छै।
जेहने घरक मुँहथरि रहै छै
तेहने ने बाटो धड़ै छै।
जेहने जेकर बाट रहै छै
आचारो-विचार तेहने होइ छै।
जेहने आचार-विचार रहै छै
तेहने ने संस्कारो बनै छै।
जेहने जेकर संस्कार होइ छै
तेहने ने जीवनो भेटै छै,
तेहने ने कला-संस्कृतो होइ छै।
जेहेन जतए केर कला-संस्कृति रहै छै
मनुक्खक मुँहथरि तेहने होइ छै,
साहित्यक मुँहथरि तेहने होइ छै।

पचमेड़

पाँच मेड़ मिलि एकठाम
कहबैए पचमेड़।
जहिना बाट चारि मिलि
कहबए चौमेड़।
मेरहा-मेरहा जौं विचार करब
रंग-बिरंगक पचमेड़ देखब।
आउ देखी आगूक मेड़
खाजा-लड्डू, जिलेबी-बुन्‍िया ओ बताशा
सभ मिलि एक
सेहो कहबैए पचमेड़।
फुट-फुट भऽ टुकड़ी बनि
नाओं अलग एका-एकी
जहिना आड़ि-घुर फुटल
आड़िये-धुर नाओं कहबैत।
तहिना ने खजो-लड्डू
खजे लड्डू कहबैत।

मेड़-मेड़ मिलि-मिलि
मधुर-मधुर जहिना बनैत
तहिना ने विचारक बीच
करक चाही विचार यौ मीत।

मिलि विचार-आचार पाँच
पचमेड़क संज्ञा लैत साँच।
विचार मधुर मेड़क
अछि प्रत्यक्ष पचमेड़क।
तीनू तीनठाम भेने
कहबैत बलजोरी अछि भने।

खपड़ा

माटि-पानि संग मिलि
सानि-बाटि कऽ मिला-मिला
मुंगरीक माइर मारि कऽ
थोपुआ खपड़ा बनाओल जाइत।
ठोकि ठठा थोपुए जकाँ
नरिया सेहो बनाओल जाइत
बात अलग चाकोपर
नरिया खपड़ा बनैत हाथोपर।
साचा पाबि टाली बनैत
नम्हर-नम्हर गड़ धड़ैत।
नरिया-थोपुआ, टाली
एक-दोसरपर बजेलक ताली
कहियो एक-दोसरक बीच
मेल-मिलाप नै केलक खाली।
एक मुंगरी दोसर चाक
मारि खा-खा बढ़ेलक हाथ।
देखि दुनूक मेल-मिलाप
टाली खपड़ा आबि-आबि करए लगल साफ।
साचा भरे बनल टाली
अपन शरीर केलक भारी।
बत्ती कोरोसँ बनल ठाठ
जबाब देलक जोड़ल हाथ।
आबि बीच्चेमे एस्वेस्टस
सभकेँ हड़बड़ेलक।
टगि-टगि खपड़ा टाली
नपरा बनि होंसथए माथ खाली।

गामक इयार

अहाँ लेल परदेश तियागल
अहींले सुख-सुविधा तियागल।
परदेश कमा लोक धन बनबैए
सुख-भोगसँ तृप्त रहैए।
बाढ़ि-रौदी सहि-सहि
अहींक संग रहै छी।
अहाँक सिनेह पबैले
आगि-छाइ सेहो सहै छी।
फूसिघर मे रहि-रहि
पानि-पाथर सेहो सहै छी।
लत्ता-कपड़ा बिनु तन
प्रेम करैत आएल मन
पाला-शीतलहरी सहि-सहि
संग अहाँक पूरै छी।
इयारक-यारी निमाहि-निमाहि
मातृभूमिक संग जीबै छी।

पएर पादुका

विचार-सकल बीच फँसल
अप्पन आन बुझाइए।
इम्हर केकरा के देखत
दूरेसँ छिड़िआइए।
दोहरी जिनगी देखि-देखि
अपनो मन बौआइए।
भेद-भावक जइ नगरीमे
अइयो ओ चीज देखाइए।
आइ गप-सप्पक बीच चीज ओ
बदलल अवश्य बुझाइए।
गप-सप्प ओ बेवहारक बीच
अन्तर सभ दिनसँ अबैए।
बूझि-बूझि बुझैत
रहलौं हम डरैत
एना किअए भऽ जाइए।
होइमे कोन
हेबे करत
हृदए हमर कहैए।
किअए पएर पादुक अपन
पहिर-पहिर नै चलैए।
एम्हर-ओम्हर देखि-देखि
निचलाकेँ ऊपरे-ऊपरे
ऊपरका खोंटि खाइए।
तरे-तरक ऐ चालिकेँ
नै बूझि मारि खाइए।
बचल जिनगी अकारथ बना
कामौर कान्ह चढ़बैए।

छठि

पोखरिक चारूकात
बनौलक गौआँ घाट।
भरल पथिया लऽ
धेलक सभ बाट।
पहुँचल सभ हाली
सजेलथि अपन-अपन डाली।
जरबाक लेल तैयार भेल दिआरी
हाथियो केलक अपन तैयारी
जरैत दीप कुरनीपर
लऽ धेलक माथपर
अछि हाथी बैसल
आइ घाटपर।
टौकना, खमहरूआ, सुथनी,
हरदी, आदी इत्यादि
सभ पुराओत अपन-अपन फर्ज
सभ, चुकबए चाहैत अछि
अपन-अपन कर्ज
देत सूर्यकेँ अर्घ।

भोगी

नाच करए बानर
चाउर खाए मदारी
बीचमे तँए अछि सरोकारी।
विकासक नाओंपर भऽ रहल अछि नाच।
मानसिकता, मानसिकता, मानसिकता
पसरल अछि चारूकात
नीक बात!
किएक नै हुअए विकास।
बीक रहल अछि चारूकात
ब्लडप्रेशर-डायबिटीजक गोली
संगे-संग
तैयो मदारीये बनल छथि तियागी
भरि जीवन भोजन केलनि बैसारी
ऊपरसँ दवाइयोकेँ बढ़ौलनि बेपारी।

भोग करैत-करैत भेल छथि अघोर
तइपरसँ रटना लगेने छथि ताबड़तोर
स्वर्ग जाए चाहैत छथि सोरपोर।

हमरा बीचमे हुअए कोनो नै बाधा
हम सभदिन रहलौं जे मधुशाला!

बनलै तँ अछि विचारशाला
जइमे लटकल अछि बड़का ताला।

श्रोता

भागवत वाचन शुरू भेल
श्रोता सभ आबि-आबि जगह लेल।
चारि तरहक श्रोता बैसल छथि
अपन-अपन काज-धियानमे लगल छथि
बाचको आ श्रोतो।
एक तरहक श्रोता
भागवत सुनि नीकक प्रचार करै छथि
दोसरोकेँ नव गप्पसँ अवगत करबै छथि।
दोसर श्रोता अंगीकार करै छथि
मुदा बजै नै छथि बिना पुछने।
तेसर श्रोताकेँ देखियो
बैसल छथि भागवत प्रवचनमे
मुदा धियान छन्हि व्यापार मंडलमे
घुरिआइत-नुरिआइत।
स्पष्ट अछि किछु नै पेला ई
प्रसादेटा खेलाह ई।
चारिम श्रोतापर करू विचार
ई छथि मुदा सदाचार
सुनितो छथि आ गबितो छथि
अपन जिनगीक क्रियासँ मिलैबितो छथि।
ओतबे नै
डेन पकड़ि पछुएलहाकेँ खींचितो छथि
आ,
ठमकलहाकेँ धक्का सेहो लगबै छथि।

कल्याणी

कल्याणी नाओंसँ लगैत अछि जेना
केने हेती ई किछु एहेन काज
वा करतीह।
जइसँ भेल हएत कल्याण
वा हेतै कल्याण।
मुदा से भेल आकि नै भेल
एत्ते धरि जरूर भेल।
भाग्य-तकदीर सभसँ पैघ होइत अछि
से कहि जरूर गेल।
शब्दजाल
वाक्यजाल
सन महजाल।
बनि बना क’
फँसबैत धरि
जरूर गेल।

देश

हमर देश
किछु लोक खेल रहल छथि धुरखेल।
खुट्टीसँ आगाँ पड़ल बड़का देबाल
देवालक भीतरे लागल अछि मड़कड़ी चारूकात।
इजोत चकचकाइत अछि
दिने जकाँ राइतो बुझाइत अछि।
चुट्टी-पिपड़ी छोड़ि सभ किछु देखाइत अछि
मुदा,
देबालक अंतिम खुट्टीसँ ओम्हरे
भऽ रहल अछि मनोरंजन।
हेबक चाही
जरूरतसँ ऊपर उठि गेलापर
स्वभाविक अछि।
मुदा देवालसँ इम्हर
बोन-झार सदृश मनुक्खक जड़ल रूपक
खेखनैत स्वर कियो सुनैबला नै
चारि तरहक नाओं रचैबला लोक
देशक भीतरेमे बड़का देवाल ठाढ़ करैमे
अपनो उड़लनि होश।
कऽ रहल छथि किलोल
हमर देश अछि अनमोल
एक्कैसम शदीमे चलि रहल अछि ताबड़तोर।

आश्चर्य

चहारदेवालीक भीतर मात्र
गनगनाइत अछि बोल
भऽ रहल अछि भोजक बदला भोज
मात्र ओम्हरे अछि ई गरदमगोल
माने चहारदेवालीक ओही पार
बुझबैत अछि अपनाकेँ मनोरंजन योग।

परती-पराँतमे रहएबला दिनकट्ठू
जनमहि काल भेल छल मइटुग्गर
छेँटगर हेबासँ पहिने
ओ कहबैत छल दूधकट्ठू
आइ दुनू हाथ जोड़ि
दू सए फीट एन.एच. सड़कक कातमे
हजारक-हजार कहबैत अछि दिनकट्ठू।

पएरमे चट्टी नै छै पहिरैले
चलए मुदा पड़तै पक्की सड़कपर
शीशा-काँटी पसरल सड़कपर।
खाइ-पीबैक नै छै जोगार ओकरा
आ ने छै कोनो रोजगार
चारूभरसँ खाली सुनै छै
-जल्दी जोड़ि लैह सरोकार तूँ
एक्कैसम सदीक समाज तूँ।

भाषा भेद

हमरा सबहक माथपर
पसरल अछि मरलत्ती जकाँ किछु
कियो सुचिंतक नै जे
चिंतन करता ऐपर
ई कथी लतड़ल अछि सभपर?
मुदा दुर्भाग्यसँ
ऐमे छुपल अछि किछु बात
जइमे अछि नै एक्कोटा पात
सबहक कहब छन्हि

“ई आगाँ चलि कऽ
करत प्रदूषण साफ
जीबैक लेल स्वच्छ हवा-बसातक
अछि जहिना खगता
करत ई दूर सबहक बेगरता।”
देखा चाही ई दूर करत प्रदूषण
आकि करत सभकेँ निपत्ता।

नोर

गोरसपट टकधियान लगेने
मुनिया बैसल अकानैए।
घर-अंगन, द्वारि-दरबज्जा
भोरे सभ दिन बहारैए।
बर्तन-बासन, छिपली-कटोरी
सभ दिन चमका कऽ मांजैए।
झक-झक झलकैत
थारी-बाटी देखि
मुनिया माए गुनगुनाइए।

गुनगुन्नीमे अह्लाद भरल छै
सुख-दुख सेहो उमरल छै
मुनिया आब छोड़त ई दुन्धियाँ।

माइक आँखिक नोर
मुनियाक हृदैमे उठबैत हिलकोर
भऽ जाइत अछि बेहोश।

होश अबिते फेर अकानैए
आँखिक नोर निङहारैए
माइक मन टटोलैए।
सुखक नोर आकि दुखक नोर
दुनू एक्के संग टघरैत-झहड़ैत
माएक चेहरापर देखैए।

खूर-खूर, खूर-खूर काजौ करैए
घर-आंगन सम्हारबो करैए।

मुनिया मुदा ई बूझि नै पबैए
की खुशी आ की दुख, एक्के संग
माइक आँखिमे ई नै बूझि पबैए
यएह बेवसी मुनियाकेँ सतबैए।

धारक कात

अपना आँखिये सभ देखैए
अपना चालिये सभ चलैए।
सज्ञान-अज्ञान आँखिक बीच
चालियो अपन चालि मारैए।
जहिना धारक दू भीत्ता बीच
पान्कि तेज धार बहै छै
तहिना मनुख-मनुख बीच
अपन-अपन जिनगीक धारा छै।
चालि-चलनि सदृश टुकड़ी
जुटि-जुटि महार बनै छै।
जहिना धारक महार संग
आकृति रंग-बिरंगक छै।
सभ मनुख बीच तहिना ओहिना
सदएसँ बनल अबै छै।
एक जाइए दोसर अबैए
उराहि-उराहि कर्म करैए।
उराहए-निमाहए लेल
बेवस्था बीच छै अनमेल।
कियो लिरही पोखरि सदृश
तँ कियो मरता इनार जकाँ
सदएसँ पड़ल मरता भेल।
बेवस्था जेकरा हाथ लगल छै
सेहो तँ भूतही धार बनल छै।
उनटैत-पुनटैत करैए खेल
तामसे बीच बिखाह अछि भेल।

मारल बुझ्ध

मरलेमे मारि खा-खा
मारल बुझ्ध कहबै छी।
मरले बाट पकड़ि-पकड़ि
हँसी-खुशीसँ जीबै छी।
मरले ने जीवियो जाइ छै
जीलहे ने मरबो करै छै।
जहिना पबिते अद्राक पानि
मुइलहो धार जीबै छै।
भलहिं जीतहा धार बीच
तीन-मसुआ ओ कहबै छै।
तीन धार किएक ने हो
ऊहो तँ धारे कहबै छै।
बाट-घाट बना-बना
यात्री पार करै छै।
मुइलहा-जीतहा बीच सदए
तीरम-तीर चलै छै।
एकक सम्बन्ध हिमालयसँ रहने
फाँड़ी सेहो फुटबै छै।
ऊहो बीच दोसर एहन छै
अपने बेथे बेथाएल छै।
एक-दोसर बीच ताना-तानी
चलैत आबि रहल छै।
एकेसम शदीक ढाढ़स बना
नहर खुनबै छै।
कागज-पत्तर बीच सदए
ओझरा-ओझरा मरै छै।

खुशी

ओर-छोर विहिन दुख जहिना
सुखोकेँ तहिना ने होइ छै।
एक जाइए दोसर अबैए
दुख-सुख सेहो कहबैए।
सुख-दुखक चालि अजीब छै
संगे-संग चलैत रहै छै।
तारा-ऊपरी लटपट-सटपट
छाती मिला-मिला चलै छै।
सभकेँ अपन-अपन खुशी छै
चाहे व्यक्ति हुअए आकि परिवार।
तहिना ने रोगो-वियाधि छै
अपन-अपन सबहक दरकार।
बेकती-बेकती बीच-बीचक
केना दुनू संगे चलतै।
जाबे तेना नै चलतै
व्यक्तिक परिवार केना बनतै।

बाट-बटोही

बाट चिन्हबैत बटोहीकेँ
पहुँचबैत घाट बटोहीकेँ।
चलि-चलि बटोही पहुँचैत
घाट लेल बाटे-बाट।
विचारक संग जँ चालि रहल
घाटपर जाइसँ कियो नै रोकत।
विचारक टुकड़ी वाणी बनि वाण
रच्छा, शक्ति बनि उभड़त
अपन-अपन।
शक्ति तँ शक्तिये बनि
चाइलिक भरे खाइए।
एक बटोही भार बनि
भारक संग भरमबैए।
दोसरक किरदानी देखि-देखि
गारा संतोष लगबैए।

हे यौ अहाँ

हे यौ अहाँ, केलौं जे किछु अहाँ
जे केलौं अपनेले अहाँ।
तइले दुख हमरा अछि कहाँ।

सुन्नर निर्मल छोड़ि अहाँ
अकल्याणक बाट पकड़ि
खुरछाही कटैत रहलौं
बदलैत रूप ओ स्थितिकँ
चिन्ह-जानि क' तैयो अहाँ
ढेका पकड़ि टहलैत रहलौं अहाँ।
आइ जौं हम, किछु बजै छी
किछु करै छी
ऐमे केना मास्टरी करै छी अहाँ।

काल्हि अहाँकँ हमर
कोनो भान नै छल
कन्निको धियान नै छल।
मुदा, भुखल केर पेट भरबाक जगह
तेल, फुलेलक फेरिमे
धकलैत ओइ जेरमे रहलौं अहाँ।

आब गाम, गाम नै रहल
विश्वक गाम भऽ गेल।
अहाँक बजारोसँ पैघ आ सघन
जतए इमानदार, कर्मठ, उदार
रहैत आएल अछि आइसँ नै सदिऔंसँ
जेकर साक्षी अछि इतिहास।
संभवत: अहुँक चपचपी सघन
भऽ जाइत अछि तखन
गामेक नक्शामे।

अपन गाम

उड़ैत-उड़ैत उठि नै सकलौं
उजड़ि गेलौं उपटि गेलौं।
केरा आ अड़िकंचनक पात
कलक बगलक खत्ता बले
दुनूक लहलहाइत वीर देखि
विश्वस्त भऽ आश्वस्त भऽ
हम उड़ि गेलौं।
बिना जड़ि-मुड़ीक भऽ गेलौं
ठुठ गाछ सन,
नव पेंपी खोजक लिलसा
मनमे अछि हमरा व्याप्त
मुदा,
खत्ताकेँ हम बुझै छी अधला
जे हमर करत कल्याण
संभवत: तँए
हमरा नै अछि विश्वास
उड़ैत-उड़ैत उठि नै सकलौं
बौराए गेल छी अकासे-अकास।

किछु नै फुराइए

की कही कहल नै जाइए
देखै छी रहल नै जाइए।
सुनै छी तँ आश्चर्य लगैए
हवाइ लड्डू सगतरि बिकाइए।
हाथीक बदला सिक्कड़ि लेने
साँझ-परात घुमैए।

लेल्हा, लुल्हा, लुटलाहा
बंचित भऽ कऽ
अपन भाग्यपर कनैए।
बेवस्था केर होइत नाच
साँझ-परात सभ देखैए।

निनाएल आँखि, भकुआएल मोन
नैसर्गिक प्रतिभाक टोना करैए।
विश्वक आहटि पाबि
विज्ञानक सुगबुगाहटि देखि
किछु क्षणले सभ एक होइए
मुदा,
ओ सिक्कड़ि
कखनो जातिक तँ कखनो धर्मक
माला पिन्हबैए।
कखनो झालिक धून तँ
कखनो मृदंगक।
अपन धुनक धून्मि सभ अंध भेल बौआइए
किछु नै फुराइए।

के मैथिल?

जहानक परम सत्य
जेकरा अंग्रेजिया युनिभर्सल सच्च कहै छथि-
"सुरूज पूबमे उगैए।"
जौं बेर-बेर आदित्यसँ पूछल जाएत
तँ की हएत...?

ओहो भऽ जेताह भक्
की देखबए चाहै छथि
संसारक लोक...
की हम कर्तव्य पथसँ विमुख छी?
प्रत्यक्षकेँ प्रमाण की?
किअए देतीह वैदेही बेर-बेर अग्नि परीक्षा।

दशानन जौं सीयासँ
करितथि सम्पर्कक प्रयास
भष्मिभुत हएब निश्चित छल
भगवानोकेँ बूझल छलनि
तखन रघुवर किअए लेलनि
सीताक अग्नि परीक्षा?
मिथिलाक बेटी कतए गेलीह...
दोख केकर?

राजधर्म वा कर्तव्यबोध
भरिगर पड़ल लोकक अविश्वास
जकरा लेल सुखसँ विमुख भेलथि रघुवर
ओकरे आँखिमे नोर नै...
तँए, दूर नै भगाउ
बेर-बेर किअए कहै छी
"हमहूँ मैथिल"
कखनो तँ अपन मोनसँ पुछू
"अहाँ मैथिल, आकि हम मैथिल?"

फूलबाबूकेँ भेटलनि पुरस्कार
वयनाक धेने हथियार
मुदा, हुनक नेना-भुटका

मैथिलीसँ अनभुआर...
फूलबा मैथिलीक नै अछि
साहित्यकार।
मुदा हाथमे भाषाक पतवार
धेने घुमि रहल अपन खेत-पथार
डोका-काँकोर बीछ ओ
भैंटक लाबा चिबा कऽ
उफनैत सोन्ति जरा रहल अछि
मिथिलामे बैसल.....
मुदा,
प्रश्न रहिये गेल
के मैथिल?

बाधा

विदा भेल मंगला पूभर
कान्हपर टँगने अछि साइकिल बालुपर।
कहुना कऽ लगिचेलक
लटपटाइत पहुँचल
धारक कछेरमे।
बिनु पानिक अछि धार
चक-चक करैत अछि बालु चारूकात।
नाउ नै बालु देखि भेलै
मंगलाकेँ थोड़े होश एलै
अपन छूच्छ जेबीपर भरोस भेलै
आब टपैमे कोनो नै हएत बाधा
पहुँचबे करब सरायगढ़क पाठशाला।
मुदा,
मंगला लसकि गेल घाटपर
नजरि दौगौलक अपन कोनो लाटपर।
जेबीमे देने हाथ
तकैए चारू कात।
सोचैए,
आब की करबै हौ बाप
ई तँ लेबे करतै घाटी।
जेना लगैए एकरा उठल छै आँती।
सुखलौ घाटक लेतै खेबाइ
नै देबै तँ देत ई रेबारि।
सहए भेल मंगला घूमि गेल
पच्छिमे मुड़ि गेल।

कविता

हम नै बिसरब
अपन सनातन आ संस्कार।
नै बिसरक चाही अहुँकेँ अपन आचार
दोस बनब आकि दियाद-बेहाल
आकि करब खाली हाल-चाल।
तैयार भऽ गेल अछि सबालक महाल।

अहाँ नै बुझै छिऐ
बनि जाउ दियाद।
अहाँ करू किछु रियाज
पाँति राखू चारि याद।

यौ दोस अहाँ आनू अपन होश
कए लिअ स्वीकार
हे यौ दियाद।

हिया गुनि भरल
दियाद सुनि पड़ल।
फाँट बीचमे आबि धूनि पड़ल।
हट, हट, हट नै तँ घसक
फाँट करए उद्घोस।
दुनू अपन ठाम बेहोश।
मुदा,
तैयार भेल सोर-पोर
कल्याण लेल नै जोर
अपन फाँटले ताबरतोड़।

खास

खास जगहक खास आदमी
खास जिनगीमे खास बात।
देशक नाओंपर भऽ रहल अछि ई खास।
मुदा,
जखने देश एक परिवार
सभकेँ चाही रोजगार।
खुशी चाही सबहक घर-द्वार
आकि ईहोमे करबै बेपार?
गुजरि गेल मध्यकाल आ भक्तिकाल।
मुदा
पाछू मुँहे लुढ़कल किएक जाइ छी यौ महराज?

फंदा

जखने करब नखरा
सभ कहबे करत हमर दऽ दिअ बखरा
जँ अहाँ रहब शांतिचित
भेटत अपन सभ परिचित।
करब अहाँ कल्याणक काज
सभकेँ हेतै अपने-आपपर लाज।
लाज सिखबैत अछि काज
आ मुँहो मोड़ैत अछि हठात्
भऽ जाइत अछि केनादन
धऽ लैत अछि अमती काँटसन।

डेग

गामक गाम भेल वाम
जखन ओ केलनि एलान
छोड़ह आब अल्प्राजोलाम।
गाढ़ निन्नमे डूबि जा दोसरे साँझ
मुदा ऐ लेल करए पड़तह एक काम।
आपसमे बैस निर्णए करह आम
करह प्रतिज्ञा खा सप्पत
तोड़ि देब, छोड़ि देब
देहेजक ताम-झाम।
करब मात्र आवश्यक खर्च कल्याण।
बहुतो कएलनि स्वीकार।
जिनका सिरपर बेटीक बिआह छन्हि सवार
वएह आदमी बेटा बिआहमे
भऽ जाइ छथि वाम!
कहू,
केना टुटत दहेजप्रथा केर ताम-झाम?

प्रश्न आगाँ आबि केलक सबहक माथ जाम
भऽ गेल गोलबन्द किछु गाम
पुन: भेल सप्पत-सप्तान।
अपना सभ छी बुधिजीवि सभ प्रणाम
चलत अपने सबहक गोड़ धाम
मुदा, चलए पड़त अपनो एकचालिपर
कम-सँ-कम भेल गोलबन्द गामपर।
चलए लगल सभ भऽ एकठाम
किछु दिन मात्र चलल ई काम।
बादमे देखल गेल गरीब-धनीक बीच
ठाढ़ भेल बड़का खाम्ह।
देखि सकै छी पचिसो गाम।
समस्या तँ अछि भेले भेल बाम
आब कोन करब काम।

ऐ लेल विचार आ दृष्टिकोण बीच
रचए पड़त गुनए पड़त देखए पड़त
तखन हएत सर्वकल्याण

गप्प देलासँ चलत नै काम
विचार कऽ उठए पड़त
समाजकेँ चिन्हए पड़त।
समस्याकेँ देखए पड़त
यथार्थकेँ जानए पड़त।
तेकर बाद
सर्वकल्याणसँ सरोकार जोड़ए पड़त।
बेवहारिक रूप आ चालि धड़ए पड़त।
गप आ काजक बीचक खदहा भरए पड़त
तखन होएत समस्या भराम।

बुझैक बाट

जहिना चलैक बाट होइ छै
तहिना तँ बुझैयोक बाट छै।
जेहेन जे बाट चलै छै
तेहने घाट पहुँचै छै।
कियो पहुँचए घाट सरोवर
कियो पहुँचए कमला घाट।
कियो पहुँचए मरैत परलाही
तँ कियो पहुँचए धोबिया घाट।
जेहेन जे घाट पहुँचैत
तेहने जल से पेबो करैत।
जेहेन जल जे पाबि पबैत
से तेहने ने पीबो करैत।
गुण अवगुण तँ पाछू बुझैए
तत्-खनात तँ पियास बुझबैए।

कनीटा फूसि

कनीटा फूसि बजा गेल
पढ़ुआकाका लग आइ।
पढ़ुआकाका बूझि गेलाह
टोकि कऽ आगूमे थूक फेक देलाह।
सरमे-भरमे किछु नै बजलौं
आगू माहेँ देखि नै सकलौं।
सोचैत-सोचैत सोचि नै सकलौं
अपन गलती बूझि नै पेलौं।
नीक बेजाए बीच रहलौं सभ दिन
आगूक मतलब बूझि नै पेलौं।

पोखरि उड़ाह

सोलो सालसँ गदियाएल पोखरि
उड़ाहए लेल तरसैए।
करमी-केचलीसँ भरियाएल पोखरि
कुहरि-कुहरि कहैए।
युग-युगसँ दुदिसिया मारि
मुर्दा बाट पकड़ेलक
सहे-सहे पसि-पसि
घाटक मुर्दा बना देलक।
नै रहल कोनो आश जिनगीक
आ ने रहल कोनो मनोरथ
हारल मन बाजि ने पबैए
बात अपन कोनो सार्थक
की कहब केकरा कहब
अपन बेथे सभ बेथाएल।
देखत के केकरा यौ भैया
बीख पीब सभ अछि बनल बिखाह।

घाम

घाम चुबा-चुबा कऽ
तमैत अछि कोलाक कोला
लगबैत अछि फसिल
धैर्य आ दिलसँ।
बाढ़ि-रौदी बीच सदिखन
किसानक हृदैमे होइत अछि
धैर्यक गर्दमगोल।
अपनो खाएब आ दोसरोकेँ खिआएब
यएह तँ हिनक अछि मनोकार।
मुदा
ऐ मनोकारकेँ कियो नै दैत अछि।
सभ अपन-अपन सरोकार
कागजपर पुड़बैत अछि।
खुनाइत नहर
पाछूसँ भोथाइत अछि।
आँखि फाड़ि-फाड़ि सभ देखैत अछि
किंतु कियो ने लजाइत अछि।

ठूठ बाँस

बगुला बसिते ठुठियाए लगलै
हरिअर-घनगर बँसबिट्टी।
बास बना-बना बसए लगलै
उजड़ा बगुला सबहक पतियाएल धाड़ी।
कोनो अछि ठूठ भेल रोग-वियाधिसँ
आ कोनो ठूठ छै बाढ़ि बेटीसँ।
समूह छोड़ि-छोड़ि कोनो
ठूठ भेल अपन करनीसँ।
जे कहियो छलै हरियाएल बाड़ी
सुखल अछि आइ ओ
सील बनल पड़ल अछि।
चीड़-चीड़ कऽ
जरना बना-बना ओकरा
जरने जोग कहैत अछि।
तँए कि ओकर गुण देह अकारथ
नै!
मुरदो बनि हँसैत छै।
रश्मि रूप पाबि-पाबि
रश्मि संग
हँसि-हँसि जरै अछि।

लतड़ैत लत्ती

हरिअर-कोमल तत्ती करैला
आँखि मारि-मारि कहै छै।
अछैते औरूदे निकलैए प्राण
तड़सि-तड़पि कऽ कहै छै।
ऊपरे-ऊपर एना दबतै
जनु भम्रमे पड़ल छलै।
लत्ती बूझि लतड़ए देलकै।
संगी कहि-कहि संग धऽ धऽ
धात केलकै भीतरे-भीतर।
जइ सेवा लेल जन्म भेलै
किछु कहाँ पाबि पेलौं
ई गप ओ
बुझलक बाद।
जिनगी अकारथ बना-बना कऽ
मृत्युक बाट अपने धेलक।

बौआएल बटोही

बिनु ओर-छोड़क बाट बुझने
ओर-छोड़ बिनु बुझने बौआइत रही।
आगू-पाछू देखि-देखि बटोही
मने-मन पचताइत रही।
हमरे सन ईहो बटोही
हराएल बाट बढ़ए चाहैए।
सबहक एक्के उदेस अछि
सुखसँ जिनगी जिबए चाहैए।
बाट-बाट सबहक भिन्न-भिन्न
जे जा-जा एकठाम मिलैत।
एकबट्टी, दुबट्टीसँ बढ़ि-बढ़ि
पचबट्टी जा-कऽ फँसैत।
जइ पचबट्टीपर पहुँच कऽ
रावण हरलनि सीताकेँ।
ब्रह्मचारी रूप बना सजि-धजि
भ्रमित बनौलनि सीताकेँ।

फकुआक रोटी

भादबक पूर्णिमाक इजोत
बदरीहन बादल चमकि उठल।
छने भरिक भलहिं किअए नै
भीतर-बाहर ज्योति पहुँचेलक।
सालक तँ सभ शुभ लक्षण
माघेक बर्खा कराओल स्नान।
चढ़िते फागुन सजबए लगल
फूलसँ लदि गेल आम।
फूले नै फड़ो भेल तहिना
आशा-अशी चैत-बैशास बीतल।
चढ़िते जेठ सिनुर सिंगार कऽ
भरि-भरि रस रसाल बनल।
जेठ-अखारक सुख-भोग सभटा
साउनेमे सठिया गेल।
भादवक झटकी केना कऽ कटतै
भकुआक रोटी आश भेल।

पंच परमेश्वर

भगवती पूजामे
पचमेड़े प्रसाद चढ़ै छै।
खाजा-लड्डू, जीलेबी-बतासा
बुनियाॅ मिलि पचमेड़ कहबै छै।
जहिना पाँच दिससँ अबैत बाट
पचबट्टी कहबै छै।
तहिना पाँचो मधुर मिलि कऽ
पचमेड़ सेहो कहबै छै।
पाँच नदीक बेग मिलि जेना
प्रशान्त सागर कहबै छै
तहिना ने पाँचो विचारधारा
पंच परमेश्वर कहबै छै।
पंच प्रमेश्वर बास करए
सुख-दुखक मेल-मिलाप करए
पाँचोक सुख-दुख पाँचो बूझि
परमात्मा परमेश्वर नाओं धरबए।

गाए

मंचामृतक समुद्र
गाएकेँ कहल जाइ छै।
सभ किछु रहितो बेचारी
पशु बनि जिनगी जीबै छै।
अपन अजादी तियागि-तियागि
जंगल छोड़ि संग पकड़ै छै।
अपन देह गला-गला
सेवा धर्म बूझै छै।
दूध अमृत
अमृत छी दहियो।
घी ज्ञान कहबै छै।
आषब-अरिष्टि बनि-बनि
जीवन दान गोंत करै छै।
आंगन-घर पवित्र करैले
गोबर जिनगी दान करै छै।
अपन फला-फल पबैले
सभ किछु लुटबै छै।

तुलसी

पंचामृत जहिना बनै छै
मचमेबो तँ तहिना होइ छै।
पाँचो गुणसँ भड़ल-पुड़ल
पंचांगम कहबै छै।
पात चढ़ै छै देव सीर ऊपर
पूष्प गंध अकास उड़ै छै।
शक्तिवर्द्धक बीआ बनि कऽ
जीवन दान करै छै।

डाँट-चाम मिलि-मिलि
गाछ रूप धड़ै छै।
अपन जिनगी हरैत-भरैत
दोसरोक जीवन भरै छै।

सीरक तँ अजीब रूप छै
तर-ऊपर जिनगी धड़ै छै।
अपन कलाकारी देखा-देखा
नाओं कहाँ बदलै छै।

काँच फल

काँच फलक ठेकान कते
जते काल देखै छी, मात्र ततेक।
काँच माटिक मूर्ति जहिना
ढाँचा मात्र कहबैए।
तहिना तँ फूलोसँ बनल फल
सिरखार मात्र कहबैए।
आ वएह सिरखार आशा बान्हि-बान्हि
रौद-बसात सहैए।
पहिने सिरखारसँ खिच्चा बनैए
फलक रूप तेकर बाद धड़ैए।
मुदा ऐ दुनियाँक विसबासे कतेक
खिच्चासँ आगूओ बढ़त।
डम्हा-डम्हा रंग लऽ कऽ छिटकत
पाकल रसगर फल बनत।
काँचे फल जकाँ दुनियो चलै छै
हँसैत-कनैत संग बढ़ै छै।

लघु कविता

हँसैत लहास

लहास माने मुइल
मुइल माने लहास।
ई के नै बुझत हठात्।
गुम-सुम भेल छल जँए ओ
बुझाइत छल लहास तँए ओ
मुदा,
आब ओ बाजत
बजैत-बजैत हँसत
अहाँक कृतिपर
बनल संस्कृतिपर।

प्रकाश

ज्ञानक प्रकाश
जाइत अछि ओतए तक
जतए कियो नै जा सकत हठात्।
मुदा,
ज्ञानो भऽ जाइत अछि गुलाम
सांकृत्यायन पड़ै छथि मोन घराम।

अगिलह

आगि-पानिकेँ
मनक माइनकेँ
अजीब बात अछि।
मित्र दुश्मन देवता
तीनू मानि लोक
धड़ैत अछि छेबता।
सप्पत खाइ काल देवता
लोकक घर जड़बैकाल मित्ता।

एकक मीत

दोसरक हृदए करैत विदीर्ण
अपनाकेँ साबित करैत अछि वएह
तीनूमे बँचल अछि जएह।
बारहे-बारह घंटा दुनूक छै
राति
दिन।
आगूमे अड़ल छै
उदय
अस्त।
रातिक अंत उदयसँ होइए
भोरक अस्तसँ...
अस्त-व्यस्त हम
नै बुझब तँ के बुझा देत?

दर्दक डरे

हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरकेँ
सुनैले नै छथि कियो तैयार।
जइमे मात्र ओ मात्र गाओल जाइत अछि
संस्कृतिक गीत।
कियो नै बनए चाहैत छथि मीत
करए जे पड़तनि हुनक दर्दसँ प्रीति।

सुधार

भकोभन ओइ अन्हार कोठरीमे
जइमे काजर सन कारी राति
दिनोमे बुझाइत
अहीं कहु यौ भाय
तखन शीशामे केना आएत
ओकर चित्र केना देखाएत?

विचारक फाँट

अहाँक गप
अपन मन
दुनू मिलैए।
मिलि दुनू अछि चौचंग
खोजि रहल अछि वसंत
मुदा
बसंतक चिड़ैकेँ
संग नै राखए चाहैए
ओ असगर काइये की लेत
मने-मन चिंता करै छी हम।

पड़ाइन

गामक मुँहथरि
जंगल बनल अछि।
आइ धरि
गौआँ बौआइत अछि।
पीचे-पीच
सड़के-सड़क।
काते-कात
कतियाएल अछि।
बजारे-बजार
बौराएल अछि।

तत्व ज्ञान

बसंत आएल
गाम जाएब
आब एतए
रहि नै पएब
बसंतेक खोजमे तँ
छी बौआएल।

धोधरि

भुरकीसँ भार बनि
बील बोहरि धरि
बनि-बनि असंतोष।
धोधरि बनि धुधुआ रहल अछि।

मंगल

कातमे ठाढ़ भऽ मंगला
चारूकात नजरि दौगा-दौगा
हृदैकेँ केने अछि थीर।
नै गेल ओइ भीड़।
देखि भागम-भागक होड़
अपनाकेँ केलक एकोर।

बुढ़ारीमे

बजैत रहलौं हरदम।
केलौं ने एक्को छन।
सुनैत-सुनैत मनमन्द
सुनबैमे होइत छी बुलंद।
आब की करब
मन अछि चौचंग।

जिनगी चाह करैए
कर्मक बाट देखबैए।

हाइकू/टनका

आप्त-व्याप्त छै
भुखमरी आइयो
अनठबै छी
देखि देखि हमहीं
आँखि आँखिअबै छी।

समस्या आप्त
सोलहनी सजल
साहित्यकार
लेखे पुरान छै आप्त
केना एतै यथार्थ।

तोरा पएरे
हम नै जेबो आब
किएक तँ तूँ
भेलँ लापड़बाह
चऽल कोढ़िक चालि।

अहाँक आँखि
चपेटि लैत अछि
हमर हृदै
औनाए लगैत छी
चारू भुवन हम।

दीन-हीनले
नाटक करैत छी
दया देखा कऽ
दया-सँ-माया बीच
हमहीं फॅसल छी।

रातिक अंत
उदयसँ होइए
दीनक अंत
अस्त होइए
दुनूकेँ भेद कऽ कऽ
अजस धड़ैत छी।

पग पगहा
बाट-बटोही घाट
ढाठ बनैए
कर्म आ अकर्म नै
जे बूझि चलैए।

जीवनक रस
कालचक्र ओझल
केने आएल
दिन-रातिक भेद
तखन तँ हएत।

हरिअर लत्ती
आँखि मारि-मारि कऽ
कहै छै आबो
फल विहुन हम
रहल रहब आबो।

सातम तल
धरती सजल छै
पातालपर
अकासो सात खण्ड
मर्त देव लोक छै।

बाट-बटोही
बाटे-बाट बौआइ छै
हँसि-खेल कऽ
सभ साँझू पहर
ठेहियाए चाहैए।

बीआ अकुर
बढ़ैत बनल गाछ
पौरुष पाबि
बनाओल जिनगी
सन्हिया धरतीमे
बनौलक जिनगी।

देखि तुलसी
अनन्त सरोवर
उमरि झील
हुलसि-हुलसि कऽ
नाचि-नाचि गबैए।

अश्रु सजि कऽ
अनन्त कमल बीच
प्रेम पसारि
अमृत सजबैए
सेज-सजा कऽ छाती।

बर्खाक बून
धारसँ मिलि धारा
धर-धरा कऽ
अपना गतिये ओ
चलए चाहैत छै।

अकास बीच
स्वर्ग-नरकक छै
संसार आप्त
रचि बसि संसार
भागक बनल आश।

तामि कोड़ि कऽ
परती-पराँत बीच
भोगक चास
बनि-बनि भेल छै
ऊँचका डीह-बास।

साटि-साटि कऽ
सहे-सहे बनल
हुच्ची सदृश
एका-एकी मेटए
हँसैत खनदान।

सिरजि रूप
शिखर सौन्दर्यक
देखि बिहिया
आनि जगबैए ओ
अपन सजबैए।

प्रेमीक रूप
जमुनामे सौरभ
पाबि प्रकाश
चढ़ि-चढ़ि कऽ आबि
सभकेँ ओ देखैए।

कहू केहेन
मिथिला जेहेन छै
दसो दिशाक
धरती नभ बीच
किसान-बोनिहार?

रंग-बिरंगी
मने हेराएल छै
दृष्टि धरती
आत्मिक-भौतिक ओ
दैवी रूप बनल।

आगत देखि
तीनूक तकरार
तत्व कहैत
चिक्कन चालि चलैत
परखि-परखि जीबू।

हारि-जीतक
अजीब ऐ सृष्टिक
मन ने माने
जोग-भोग सिरजि
विपरीत चलए।

सोचि-विचारि
नापि चलि बाटकेँ
जोतिते चास
चलि-ससरि चलू
लाट बना संगमे।

बिर्रोमे उड़ि
दोगे-सान्हिये पड़ा
मातृभूमिसँ
पुरुषत्व गमा कऽ
बौआ रहल अछि।

फूल जहिना
सभतरि फूला कऽ
गंध बँटैले
संग कए कऽ बसात
नभ बीच चलैत।

नदी गोंगिऐ
कमल केर फूल
रँग बदलै
रौद लगलापर
उज्जरो भऽ जाइत।

बोन्हिारिन
केर सोणितक छै
सड़कपर
देल अलकतड़ा
नै छै केकरो पता।

फूस घरक
छप्पड़पर ठाठ
तीन आसक
खढ़, खपड़ा, चार
एसबेस्टस आब।

चाकक एक
हाथ परहक दू
माटि सानि कऽ
खपड़ा बनैत छै
थोपुआ आ नरिया।

दुनू मिला कऽ
ठाठपर पड़ै छै
रौद बर्खासँ
रच्छा करै छै घर
तैमे लोक रहैए।

रौद वसात
शीतलहरी धुनि
गरमी जाड़
वसंत-सँ-वहार
मिथिलाक इयार।

जाड़ मासमे
शीतलहरी धुनि
अबै-जाइए
कनकन्नी होइ छै
थरथरी धड़ै छै।

हरिअरका
डग-डगीसँ भरि
जाइत अछि।
करगर रौदसँ
रोहनि सभ साल।

तोरा पएरे
हम नै जेबो आब
किएक तँ तूँ
भेलँ लापरवाह
चऽल कोढ़िक चालि।

अहाँक आँखि
चपेट लैत अछि
हमर हृदै
औनाए लगैत छी
चारू भूवन हम।

बैंग बजैए
टर्र-टर्र रटैत
घोघ फल्का कऽ
उछलि-उछलि कऽ
तड़ैप-तड़ैप कऽ।

अगम पानि
जीवक जिजीविषा
उहापोहसँ
बनल स्थिति अछि
अप्पन आन भेल।

कदम फूल
सभरँगा रँगसँ
शोभित छै
झड़ैत रहैत छै
समए समैपर।

दिन-रातिक
बीच संसार अछि
विचार बीच
मेघौन आप्त छैक
उग्रास व्याप्त छैक।

खने मेघौन
खने उग्रास भऽ भऽ
चलैत-चलि
कारी घटा बनि कऽ
बुन-बुन सागर।

अकास मार्ग
ठनका आ पाथर
नचि-निच्चाँ
किनछड़ि बिरजि
परिचए दइए।

चढ़ि अखार
दिन-राति सुगंध
महमहबए
पड़िते फुहारसँ
चारूकात अम्बार।

भीर-कुभीर
छिड़ियबए क्षीर
सदति संग
ससरए समीर
राग-विरागक।

विशाल क्षेत्र
रंग-रंगक फूल
फूलाएल छै
आँखि बिनु आन्हर
देखिनिहार लोक।

गाछीक बीच
हजारो वृक्ष आप्त
सबुर गाछ
मेवा फड़ैत छैक
नजरिक कमाल।

खेल खेलक
कालक बनाओल
खेले विचित्र
दिन-राति चलि कऽ
मतिये बदलैए।

धरती संगी
संग मिलि हँसए
मातृभूमिकँ
सेवा कऽ जगबैए
जगेनिहार मात्र।

आगि पजरि
तड़पि छटपटा
धरती फाड़ि
ज्योति पबैले जीव
निकलए लगैत।

गाछ-सँ-फूल
सिरजि सजबैए
शक्तिक संग
जिनगीक परीक्षा
साधक सजबैए।

माघ मासक
राति सतपहरा
दर्शन पाबि
सहन सिरजि कऽ
राति-दिन हँसए।

अद्भुत खेल
विधाता बनाओल
आँखि-मिचौनी
राति दिन बदलि
दिन राति बनैए।

वसन्त राग
नव सूत जेबर
भरैत कहए
सदिखन जिनगी
परखति चलए।

समए संग
गति-मति चलिते
ग्रह-नक्षत्र
दोहरी बाट बनि
अन्हार इजोतक।

तमाशा बनि
कंगाल बनल छै
सपना बीच
सपनाए रहल
दिशाहीन देशक।

खुशी खुशीक
दुनियाँ बनल छै
धीया-पुताक
देखि-देखि नचैत
कथनी बीच भेद।

लुत्ती छिटकि
ठौहरीक धधड़ा
करिया धुआँ
जीव-जन्तु पड़ाइ
धीरजसँ सहैत।

शीतल नोर
झहड़ि-झहड़ि कऽ
कहैए सुना
मनक ताप बीच
पटबैत रहबै।

रग्गरक छै
पसरल वनमे
धधड़ा-धुआँ
अश्रु करूआइते
पड़ाइ छै जीव।

वेदनक वाण
योग-वियोग बीच
लहलहाइत
हफैत हवा बीच
नयन नीर ज्योति।

कोमल कली
लहलहाइए तब
शीतल पाबि
श्रृंगार सजबैत
जुआनी पबिते ओ।

गुण धरम
देखि पड़ैए तब
मधुर प्रेमी
कर्मक संग भाव
अनैए जब तब।

हँसि गाबि कऽ
जगत जननीकेँ
सेवा करैए
राति-दिन आदिसँ
मिथिलाक वीर।

वंशक वृक्ष
लतरि-पसरि कऽ
विशाल बनि
कोसी-कमला बीच
बलिदान करैए।

बाते-बातमे
झगड़ैए तानि कऽ
नइ रहैछ
कल्याणक माइन
रावणक सखाकेँ।

सृजए नित
सौहार्दक बाट ओ
जननी प्रेमी
बूझि-बूझि मर्म ओ
नूतन घाट दुर्गक।

लइते जन्म
धरतीपर आबि
अकास बीच
चक्रक चक्का जानि
नूतन बाट बना।

धारी अनेक
दुर्ग सेहो अनेक
शक्ति-सँ-शक्ति
सटि-सटि बनैछ
बटोही पार ओर।

सुख-संतोष
सरोवर बनैए
रूप करम
सदि लीला करैए
बनल सत् कर्म।

ठूठ अपन
करनीसँ भेल छै
बाँस सभटा
उजरा बगुलाक
फेरमे पड़ि-पड़ि।

दूध अमृत
आषब-अरिष्ट भऽ
जीवन दान
करैत एलै गाए
पशु बनि जिबैए।

पौरुष पाबि
रोकए नै ककरो
बाट-घाट ओ
सिरजि-सिरजि कऽ
नित नूतन घाट।

एक वन्मे
लतड़ि पसरि कऽ
पसरि विश्व
काटि-छाँटि कऽ बाट
बाटले झगड़ैए।

कतेक अछि
कल्पना यर्थाथमे
अन्तर बूझि
लगा रहल नहा
घामसँ स्वयं हम।

अखन अहाँ
रंग-रंगक फूल
सदृश बनि
बनल फूले जकाँ
आप्त-व्याप्त छी अहाँ।

हमर प्राण
थर-थर कपैए
बनि लहाश
चुपचाप ठाढ़ भऽ
देखि रहल अछि।

बबाजी बीच
पसरल जहिना
सेवा धरम
समाज सेवी बीच
गरीब-गरीब छै।

पाबि सकलौं
जिनगी अकारथ
बनि-बनि कऽ
बाट धेलौं अपने
भीतर घात भेल।

जरना बनि
सील बनल छैक
रश्मि-सँ-रश्मि
हँसि-हँसि जरै छै
मुर्दो बनि हँसै छै।

हमरा पाछू
धेने रहैत अछि
हरेक छन
उठैत-बैसैत ओ
कखनो नै छौड़ैए।

मेघ लटकै
प्रकाश छिरियाइ
प्रकृति नाचै।

मेघ बादल
दुनू चलै साधल
पहाड़ी दिस।

इन्द्र कमल
होइत अछि फूल
उज्जर धप।

थल कमल
गाएक घंटी सन
होइत अछि।

सोणित्त दान
महादान होइछ
जीवन लेल।

हरिअर आ
पीअर मिलि दुनू
काँच-पाकल

कनैल फूल
पत्तामे नुकाएल
रहैत अछि।

एतुक्का गिद्ध
पड़ाइन करैए
मनुक्खे जकाँ।

अंडी छाहरि
दैत अछि राहति
कोशिकन्हामे।

उज्जर मेघ
टिकरी बनि-बनि
जेना चलैए।

केराक वीर
अपन वीरताकेँ
घोकचौअने।

मोर-मोरनी
वादलक सह पाबि
नाचै लगैत

गुफाक गुंज
श्वेत वादलक सह
अनुगूंजित।

रँगल कोसा
लेने अबैत संग
केरा घौड़केँ।

चम्पा-चमेली
रोहन्कि नक्षत्र
कड़क रौद।

मरूआ बीआ
रोहनि आम दुनू
उमझै पकै।

तिक्खर रौद
बालुक जहाजकेँ
तेजी अनैत।

सुरेब सिसो
ऋृगवैदिक सन
कठमकठ।

पहार पार
उत्तरवारि कात
किछु अवश्य।

पाथर उगै।
पानि सटकै छैक
मेघ लटकै।

गोल-मोल छै
धप्-धप् चान छै
दाग लागल।

सुग्गा बैसल
सोचि रहल अछि
पाछू लोक ले।

सुग्गा बैसल
छै चिन्तामे डूबल
दीन-हीन ले।

परहेज आ
संयमसँ भेटैछ
पैघ जिनगी।

झुठ बाजब
पाप होइत अछि
स्वयं छोड़ि नै।

एकटा चान
सातटा देखाइत
मोतियाबिन।

कनैलक बीआ
घुच्ची बना खेलैत
बच्चा-बेदरू।

किष्कार मास
लताम लुबधल
पिरे-पीअर।

माछक चटनी
जोड़ी मरूआ रोटी
चहटगर।

दुर्गा पूजाक
मतलब होइछ
शक्तिपूजा।

अन्हार गुप्प
हाथो-हाथ ने सुझै
हवा बहैत।

राजनेतासँ
नीक मानल ऐछ
काजनेता।

गेंदा पातक
घा हाथ-पएरक
रससँ छुटै।

खेती-वाड़ीकेँ
किसान लचारीकेँ
कोन महत।

सबल साँच
दुर्बल भेल झुठ
दुनूमे फाँट।

खेरही दालि
नेबो रस मिलल
हृदै खिलल।

चौमास-बाड़ी
दालि खेसारी
गाए-बरदले।

पीपर पात
बिहरन आप्त छै
तैयो डोलैत।

शान्त हवासँ
अन्हर-बिहाड़िक
आगम होइ।

हरिअरसँ
तेज भऽ जाइत छै
आँखिक ज्योति।

वन्मे बास
वनफूलक आस
अमलतास।

ऊँच-नीचक
भेद झपने जाइ
हरिअरी यौ।

निचुका सभ
चौरस अ-हटल
ऊँचका हटि।

प्रकृति शक्ति
लाल रंग पाबि कऽ
हँसैत अबै।

प्रकृति हँसै
लाल रंग पाबि
सुधार लेल।

बीचक मेधा
हरिअर उज्जर
दूरी व्याप्त छै।

सघन डारि
एक्को रत्ती नै बैर
निच्चा-ऊपर।

निच्चा-ऊपर
समतल सघन
देखू एतए।

कोनो नै आश
छोड़ि पोरोक साग
सरदियाह।

केरा गाछमे
घौरक संग कोसा
खुश छी पूरा।

केरा गाछमे
घौरक संग कोसा
लटकल छै।

भारी रहितो
बीर खा-खा थिकहुँ
अँखियाएल।

नीचाँ ऊपर
सक्षम छै सभठाॅ
चाही टूस्सेटा।

राति दिनमे
कोनो नै अछि हीन
नाप-जोखमे।

गुण-दोषसँ
एक-दोसर बीच
अबैए फाँट।

दिन प्रतीक
बनि ज्ञानक अछि
भेल महान।

राति होइए
अज्ञानक प्रतीक
लोक कहैए।

दिनकँ दुन्नी
राति चौगुन्नी सेहो
लोके कहैए।

निर्णए लिअ
नीक संग अधला
होइते अछि।

गर्मी मासमे
किसानक आशमे
ठढ़ी अबैए।

आश धड़ैए
बाट पतझारक
सभक सोझा।

उपाए बिनु
सहसहबइए
मनुख जन्म।

पूर्ति प्रकृत
करए चाहैत छै
मनुख तन।

मनक बाढ़ि
आबि-आबि तोड़ैए
तन-सँ-तन।

आड़ि-धूड़कँ
टुटलाहा मुँहकँ
कियो ने जौड़ै।

कातिक मास
डंका बजा कऽ
तोड़ि दइए।

भरि दिन ओ
झाँट-बर्खा सजैए
रोपनि लेल।

अगहनमे
कटनी करैए ओ
धान खेतमे।

ओसा बना कऽ
मोट-महीं बेरा कऽ
उसनै कुटै।

खांहिस भरे
सोचि-सोचि कऽ डरे
महिंका बेचै।

छने-छनाक

उड़ि जाए दनाक

भेल निहत्था।

दूटा गजल-

1

एतऽ माथ चकराइए चलू घूमि चली
तनो-सँ-तन छुबाइए चलू घूमि चली

कियो केकरो नहि देखैए ऐ समाजमे
मोने मन झगड़ाइए चलू घूमि चली

गोर मौगी गौरबे आन्हर भेलि अड़ल
करिया बाट बुझाइए चलू घूमि चली

कोन उपाए लगाबी तौड़ैले ऐ फानीकेँ
टूटि मन जे कनाइए चलू घूमि चली

करब नै कोनो आस ऐ समाजसँ हम
उमेशो जौं घुरियाइए चलू घूमि चली

2

कल्याणक बाट नै पकड़तै लगैए ई
भाँड़ि-भाँड़ि सभकेँ झपटतै लगैए ई

अकालोमे काल बनि बौएलक सभकेँ
किछु बाजी तँ और मखड़तै लगैए ई

कोनो आंगुर कटने अपने होइ घा
भेद नै करबै तँ झगड़तै लगैए ई

मुँह सीब कऽ रहब तँ रहि सकैत छी
लोक गीत जँ गेबै चहकतै लगैए ई

छोड़ि देने टूटि जाएत समाज अपन
उमेश जोड़तै तँ चहकतै लगैए ई।

श्रुति प्रकाशन

कार्यालय: 8/21, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली–110008

दूरभाष: (011) 25886656–58 फैक्स: (011) 25886657

website: http://www.shruti-publication.com
email: shruti.publication@shruti-publication.com

ISBN: 978-93-80538-37-2

9789380538372

Rs. 100/- US $10